National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2023; 1(49): 162-165
© 2023 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. धर्मपाल प्रजापत
सहायकाचार्य, (व्याकरण विभाग),
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत-विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-16

Correspondence:
डॉ. धर्मपाल प्रजापत
सहायकाचार्य, (व्याकरण विभाग),
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत-विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-16

तमिल व्याकरण में सम्बोधन प्रकरण (विळि मरपु)

डॉ. धर्मपाल प्रजापत

सर्वप्रथम यदि सम्बोधन शब्द की व्युत्पत्ति के विषय विचार किया जाए तो सम्बोधन शब्द सम् उपसर्ग पूर्वक बुध् धातु से ल्युट् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है, (सम्+बुध्+ल्युट्)[1]। भारतीय संस्कृत शब्दकोष शब्दकल्पद्रुम के अनुसार सम्बोधन शब्द का अर्थ इस प्रकार है- **"अन्यत्र व्यासक्तस्य कार्यान्तरे नियोजनार्थम् आभिमुख्यविधानम्"**[2] इति। **"आमन्त्रणं सम्बोधनम्"**[3] ऐसा हेमचन्द्र स्वीकार करते हैं। व्याकरण के अन्य आचार्यों के सम्बोधन विषयक लक्षण देखे जाएँ तो कुछ इस प्रकार हैं- **"आभिमुख्यकरणं सम्बोधनम्"**[4] इति काशिकायाम्। सिद्धान्तकौमुदी की टीका पदमञ्जरी में लिखा है- **"आभिमुख्यकरणमिति"**[5] जो कि काशिका में उक्त लक्षण से शब्दशः समानता रखता है। सम्बोधनम् **"अभिमुखीकृत्य ज्ञापनम्"**[6] इति बालमनोरमायाम्। उपर्युक्त सभी लक्षण **"सम्बोधने च"**[7] 02/03/47 सूत्र के प्रसङ्ग में कहे गये हैं।

तोल्काप्पियम् तमिल व्याकरण के अनुसार सम्बोधन का लक्षण-

विळि ऐनप्पटुप कोळ्ळुम् पेयरोटु।
तेलियत् तोन्नुम् इयकैय ऐन्प।।[8]

अर्थात् - सम्बोधन से तात्पर्य है कि जो सदा अपने नाम को स्वीकारने वाले नाम (संज्ञा) के साथ ही आते हैं। अर्थात् सम्बोधन संज्ञा के बिना नहीं आते।

इस प्रकार यदि सम्बोधन के लक्षणों पर विचार किया जाये और देखा जाये तो सम्बोधन का अर्थ होता है किसी व्यक्ति को कार्य में प्रवृत्त कराने के लिए उसका ध्यान अपनी तरफ करना या फिर ये कहें कि बोलने वाले की तरफ अभिमुखीकरण। जैसे- हे कृष्ण! अत्र आगच्छ (हे कृष्ण! यहाँ आओ) यहाँ पर कृष्ण को बोलते हुए आगमन कार्य (क्रिया) में प्रवृत्ति कराना ही सम्बोधन है।

पाणिनि व्याकरण में सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति कही गई है लेकिन साथ ही सम्बोधन पद में आने वाले परिवर्तन के विषय में भी सूत्रों के द्वारा नियम किया है। जैसे "कृष्णः" यह प्रथमा का एकवचन लेकिन है जब ये ही सम्बोधन में जायेगा तो प्रथमा विभक्ति के एकवचन अर्थ को बताने वाले "सु" (विसर्ग) का **"एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः"**[9] 02/03/49 से लोप हो जाते है। इस प्रकार सम्बोधन में " हे कृष्ण!" ऐसा प्रयुक्त होता है। पाणिनीय व्याकरण के अनुसार अलग-अलग शब्दों के लिए अलग-अलग नियम हैं। जैसे

लता - हे लते! - आ ए में बदलता है।
माता - हे मातः! – आ, अ में बदलकर विसर्ग लगता है।
हरिः - हे हेरे! – इ, ए में परिवर्तित होता है।

गुरुः - हे गुरो! – उ, ओ में परिवर्तित होता है।

लक्ष्मी - हे लक्ष्मि! - दीर्घ ई, ह्रस्व इ में होता है।

भगवान् - हे भगवन्! - आन् अन् में बदलता है।

इसी प्रकार तमिल भाषा में भी शब्द जब सम्बोधन के रूप में प्रयुक्त होते हैं तो सम्बोधन रूप में परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन किस प्रकार होता है? कब होता है? इन प्रश्नों के उत्तर "तोल्काप्पियम्" तमिल व्याकरण के "विळि मरपु" (सम्बोधन प्रकरण) में नियम रूप में उल्लिखित हैं। सम्बोधन के प्रसङ्ग में विभिन्न सूत्रों के माध्यम से तोल्काप्पियर् ऋषि परिवर्तन हेतु नियम निश्चित करते हैं। जैसे-

कण्णन् - कण्णा!

उण्टान् - उण्टाय!

को - कोवे!

इस प्रकार हम विभिन्न सूत्रों के माध्यम से सम्बोधन में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करेंगे।

"तोल्काप्पियम्" व्याकरण के अनुसार सम्बोधन पद में चार प्रकार से परिवर्तन होता है- (क) शब्द के अन्त में विकार, (ख) सम्बोधन का प्रयोग होने पर अन्त वर्ण का दीर्घ, (ग) सम्बोधन का प्रयोग करने पर नई ध्वनि का आना, (घ) सहज रहना अर्थात् जैसा संज्ञा शब्द है वैसा ही सम्बोधन में भी रहना। सम्बोधन का बोध कराने वाले प्रत्यय महद्वाची व अमहद्वाची दोनों प्रकार के शब्दों में लगते हैं, सर्वप्रथम हम महद्वाची शब्दों में देखेंगें कि सम्बोधन के दौरान क्या परिवर्तन होता है।

महद्वाची शब्दों का सम्बोधन- महद्वाची शब्द स्वरान्त (अजन्त) व व्यञ्जनान्त (हलन्त) दोनों प्रकार के होते हैं, सर्वप्रथम हम स्वर अन्त वाले शब्दों के विषय में चर्चा करते हैं-

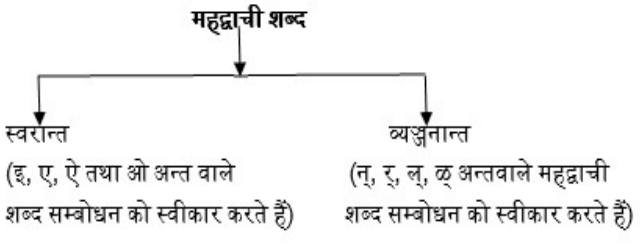

1. स्वरान्त महद्वाची शब्दों का सम्बोधन- इकारान्त, उकारान्त, ऐकारान्त तथा ओकारान्त महद्वाची शब्द सम्बोधन के दौरान परिवर्तन को स्वीकार करते हैं-

(क) तोल्काप्पियम् व्याकरण के सूत्र संख्या (601) के अनुसार इकारान्त तथा ऐकारान्त महद्वाची शब्द सम्बोधन में क्रमशः दीर्घ ईकारान्त व आय् में परिवर्तित होते हैं अर्थात् इ के स्थान पर ई तथा ऐ के स्थान पर आय् हो जाता है। जैसे-

नम्बि – नम्बी (ह्रस्व इकार दीर्घ में बदल गया)

नङ्गै – नङ्गाय् (ऐ आय् में परिवर्तित हो गया)

(ख) तोल्काप्पियम् व्याकरण के नियम संख्या (602) के अनुसार उकारान्त व ओकारान्त महद्वाची शब्द सम्बोधन में एकारान्त हो जाते हैं- अर्थात् उ, ए में तथा ओ, भी ए में ही परिवर्तित होता है-

को - कोवे (हे राजन्) (ओ ए में परिवर्तित हो गया)

वेन्दु - वेन्दे (हे राजन्) (उ ए में परिवर्तित हो गया)

शङ्का- तोल्काप्पियम् व्याकरण के सूत्र (602) के अनुसार जो नियम किया उस विषय में आचार्य तोल्काप्पियर् शङ्का करते हुए कहते हैं कि उकारान्त एकारान्त में परिवर्तित होते हैं तो यहाँ उकार ह्रस्व अपेक्षित है या दीर्घ ऊकार? इसका समाधान करते हुए कहते हैं कि ह्रस्व उकार ही यहाँ अपेक्षित है, ह्रस्व उकारान्त ही एकारान्त में परिवर्तित होता है- (603)

अपवाद- सूत्र संख्या 601 व 602 के द्वारा जो नियम किया कि इकारान्त-ईकारान्त में, ऐकारान्त-आय् में, अकारान्त-एकारान्त में तथा ओकारान्त-एकारान्त में बदलता है। लेकिन अपवाद स्वरूप सूत्र (606 व 607) उपस्थित होते हैं और नियम करते हैं-

सम्बन्धों के या फिर रिश्तों के वाचक शब्द यदि ऐकारान्त हैं और उनका प्रयोग सम्बोधन के रूप में किया जाये तो आय् में न बदलकर "आ" में बदल जाते हैं। यह नियम (602) का अपवाद है। जैसे-

अन्नै (माँ) - अन्ना! नियम 601 के अनुसार यहाँ

अत्तै (बुआ) - अत्ता! ऐ आय् में बदलना चाहिए था

अम्मै (माँ) - अम्मा! लेकिन यह 601 का अपवाद है

पास/निकट में स्थित लोगों को बुलाते समय सम्बोधन सहज (बिना परिवर्तन) रहता है अर्थात् शब्द में कोई परिवर्तन नहीं होता है- जैसे

नम्बि वाळि - नम्बि! (तुम जिओ) - इकारान्त का अपवाद

नङ्गै वाळि - नङ्गै! (बहन तुम जिओ) - ऐकारान्त का अपवाद

वेन्दु वाळि - वेन्दु! (राजा तुम जिओ)- उकारान्त का अपवाद

निष्कर्ष- महद्वाची स्वरान्त शब्दों में केवल इकारान्त, ऐकारान्त, उकारान्त तथा ओकारान्त शब्द ही सम्बोधन में परिवर्तन को स्वीकार करते हैं। इनसे भिन्न महद्वाची शब्द सम्बोधन स्वीकार नहीं करते।

(2) व्यञ्जनान्त महद्वाची शब्दों का सम्बोधन (608)- न् र् ल् तथा ळ अन्त वाले महद्वाची शब्द सम्बोधन में प्रत्यय (परिवर्तन) को स्वीकार करते हैं अन्य व्यञ्जन अन्त वाले नहीं।

(क) न् (अन्) अन्त वाले शब्द - आ में

(ख) र् अन्त वाले शब्द - ईर् में

(ग) ल् अन्त वाले शब्द - ल् से पूर्व विद्यमान् स्वर दीर्घ हो जाता है-

(घ) ळ अन्त वाले शब्द - ळ् से पूर्व विद्यमान स्वर दीर्घ हो जाता हैं-

(क) 1. न् (अन्) अन्त वाले शब्दों का सम्बोधन (610)- नकार अन्त वाले या अन् अन्त वाले महद्वाची शब्द सम्बोधन के दौरान आ में बदल जाते हैं अर्थात् न के स्थान पर आ हो जाता है। जैसे-

चोलन् - चोला ! (यहाँ न् आ में परिवर्तित हो गया)

ऊरन् - ऊरा! (यहाँ न् आ में परिवर्तित हो गया)

अपवादः - अन् अन्त वाले महद्वाची शब्दों के द्वारा यदि किसी को नजदीक/समीप से सम्बोधन किया जाये तो अन् अ में परिवर्तित हो जाता है आ में नहीं! जैसे-

चोलन् - चोल!

ऊरन् - ऊर! [यहाँ दोनों स्थलों पर न का लोप या फिर न के स्थान पर अ हो जाता है। चोलन् - चोल+अ "यहाँ अतो गुण है"]

(616) न् अन्त वाले, सम्बन्धों/रिश्तों के वाचक शब्द सम्बोधन में एकारान्त में बदल जाते हैं अर्थात् अन् ए में परिवर्तित हो जाता है, आ में नहीं! यह भी सूत्र (610) का अपवाद है। जैसे-

मगन् - मगने! (बेटे!)

मरुमगन् - मरुमगने! (भानजे!)

(क) 2. न् (आन्) अन्त वाले शब्दों का सम्बोधन-

(612) के सूत्र अनुसार आन् अन्त वाले महद्वाची शब्द सम्बोधन में सहज रहते हैं। अर्थात् आन् अन्त महद्वाची शब्द के सम्बोधन में कोई परिवर्तन नहीं होता है। जैसे-

चेरमान् - चेरमान्!

मलैयान् - मलैयान्! (सम्बोधन में कोई परिवर्तन नहीं होता है-)

अपवाद - (613) ऐसा कोई शब्द/संज्ञा शब्द जो क्रिया से बना हो और उसके अन्त में "आन्" हो तो वह सम्बोधन में सहज न रहकर आय् में बदल जाता है। यह नियम (612) का अपवाद है। (614) नियम के अनुसार यदि कोई महद्वाची शब्द गुणवाचक और उसके अन्त में आन् हो तब भी आन् आय् में परिवर्तित होता है। यह निमय (612) का अपवाद है।

क्रिया से बने शब्द का उदाहरण - उण्डान् - उण्डाय्!

गुणवाचक के उदाहरण - करियान् - करियाय्!

चेय्यान् - चेय्याय्!

(613) सूत्र में प्रयुक्त **"विळि वयिनान"** शब्द के प्रयोग से ज्ञात होता है किं कहीं कहीं संज्ञा से बने आन् अन्त वाले शब्द भी सम्बोधन में आय् को स्वीकार करते हैं। जैसे

वायिलान् (दरबान) - वायिलाय! (ओ दरबान!)

सूत्र (617) के अनुसार ऐसे सर्वनाम जो नकार अन्त वाले होते हैं वे सम्बोधन स्वीकार नहीं करते हैं अर्थात् इनका सम्बोधन के रूप में प्रयोग नहीं किया जाता है। ये शब्द निम्नलिखित हैं-

तान् (स्वयं, आप) अवन् इवन् (वह, यह) यान् (मै), यावन् (कौन) आदि सम्बोधन को स्वीकार नहीं करते हैं।

ख- रेफान्त, (र अन्त) वाले शब्दों का सम्बोधन-

ऐसे महद्वाची शब्द जिनके अन्त में आर् या फिर अर् हो तो सम्बोधन में आर् या फिर अर् ईर् में परिवर्तित हो जाता है- जैसे-

पार्प्पार् - पार्प्पीर् (ब्राह्मण- ब्राह्मणों)

कुत्तर् - कुत्तीर् (नट्- नटों)

आर् व अर् दोनों ही ईर् में परिवर्तित हो गये।

अपवाद- (619) सूत्र के अनुसार क्रिया से बने महद्वाची शब्द जो रेफान्त होंगे वे सम्बोधन में ईर् में बदल जाते हैं साथ ही ईर् के आगे एकार भी जुड़ जाता है-

उण्डार्- उण्डीर्!/उण्डीरे! (ये दोनों ही साधु हैं)

सूत्र (619) में प्रयुक्त वळुक्किन्न शब्द के प्रयोग से ज्ञात होता है कि कहीं-कहीं अन्यत्र भी आर् अन्त वाले शब्दों में उपर्युक्त नियम (619) कार्य करता है जैसे-

नम्बियार् - नम्बियीर्!/नम्बियिरे!

कणियार् - कणियीर्!/कणियिरे!

सूत्र (620) के अनुसार ऐसे गुणवाचक महद्वाची शब्द जिनमें अन्त में आर् हो वे भी ईर् के साथ-साथ ए को ग्रहण करते हैं जैसे - करियार् - करियीरे!

अ इ उ इन वर्णों से आरम्भ होने वाले सर्वनाम् शब्द "अवर्" "इवर्" "उवर्" आदि रेफान्त होते हुए भी सम्बोधन को स्वीकार नहीं करते। इसी प्रकार नीविर् तथा यावर् शब्द भी सम्बोधन स्वीकार नहीं करते।

(ग)/(घ) - (624) लकारान्त/ळकारान्त शब्दों का सम्बोधन-

ऐसे महद्वाची शब्द जिनके अन्त में ल् हो या फिर ळ् हो तो सम्बोधन के समय ल् या फिर ल् यथावत् रहते हैं लेकिन ल् या फिर ळ् से पूर्व विद्यमान स्वर का दीर्घ हो जाता है। जैसे-

कुरिचिल् - कुरिचील् (यहाँ चि में विद्यमान् इ दीर्घ ई में बदल जाता हैं)

मक्कळ् - मक्काळ् (यहाँ क में विद्यमान् अ आ में परिवर्तित हो जाता है)

ध्यान रहे सूत्र (625) के अनुसार यदि कोई शब्द ऐसा हो जिसके अन्त में ल् हो या फिर ळ् हो और इनसे पूर्व में यदि पहले से ही दीर्घ वर्ण हो तो ऐसे शब्द सम्बोधन में सहज रहते हैं अर्थात् कोई परिवर्तन नहीं होता है। जैसे-

पेरियाल् - पेरियाल्! (कोई परिवर्तन नहीं हुआ)

पेण्पाल् - पेण्पाल्! (कोई परिवर्तन नहीं हुआ)

अपवाद - (627) सम्बन्ध/रिश्ते के वाचक शब्द जो लकारान्त हो या फिर ळकारान्त हों तो सम्बोधन में ल् या ळ से पूर्व वाला स्वर दीर्घ में परिवर्तित नहीं होता है अपितु अन्त में ए लग जाता है। जैसे

मगळ्- मगळे! (बेटी)- (यहाँ अन्त में ए का सन्निवेश हो जाता है)

मरुमगळ्- मरुमगळे (भानजी/बहु) (यहाँ पर भी)

सूत्र 626 के अनुसार ऐसे शब्द जो क्रिया से बने हों या फिर गुणवाचक हों और आळ् अन्त वाले हों तो सम्बोधन में आळ् आय् में परिवर्तित हो जाता है- जैसे

उण्डाळ् - उण्डाय्! (यहाँ आळ् आय् में बदलता है)

करियाळ् - करियाय्! (यहाँ आळ् आय् में बदलता है)
ध्यान रहे ळ् अन्त वाले सर्वनाम् शब्द सम्बोधन स्वीकार नहीं करते हैं। वे सर्वनाम निम्नलिखित हैं- अवळ्, इवळ्, उवळ्, यावळ्

इस प्रकार से हमने, 4 स्वरान्त तथा 4 व्यञ्जनान्त महद्वाची शब्द सम्बोधन में किस प्रकार परिवर्तित होते हैं, यह देखा। अब हम अमहद्वाची शब्दों के विषय में विचार करते हैं।

(अहरिणै) अमहद्वाची शब्दों का सम्बोधन

महद्वाची शब्दों का स्वरान्त और व्यञ्जनान्त में विभाजन कर बहुत से नियमों के द्वारा सम्बोधन में होने वाले परिवर्तनों को दर्शाया गया है लेकिन अमहद्वद्वाची के सन्दर्भ में ऐसा नहीं है। अमहद्वाची के सन्दर्भ में एक सामान्य नियम यह बनाया गया है अमहद्वाची शब्द चाहे स्वरान्त हों या फिर व्यञ्जनान्त ये सभी सम्बोधन में "एकार" को स्वीकार करते हैं। जैसे-

मरम - मरमे! आणिल् - आणिले! [यहाँ सभी जगह अन्त में
नरि- नरिये! पुलि - पुलिये! एकार का सन्निवेश हो जाता है।]

अपवाद- सूत्र 631 में "तेळेयिनै उडैय" शब्द के प्रयोग से यह ज्ञात होता है कि कहीं-कहीं इस नियम (अन्त में एकार) का अपवाद भी पाया जाता है। जैसे-

मुयल्- मुयाल् [यहाँ ए न होकर महद्वाची लकारान्त वाला नियम प्रस्तुत होकर ल् से पूर्व वाले स्वर को दीर्घ कर देता है। यहाँ (624) सूत्र कार्य करता है।]

नारै - नाराय् [यहाँ पर भी ए न होकर ऐ के स्थान पर आय् हो जाता है। यहाँ सूत्र (601) प्रवृत्त होता है]

सूत्र (632) के अनुसार दूर स्थित किसी व्यक्ति/पदार्थ/द्रव्य को बुलाने के लिए जिन महद्वाची या अमहद्वाची शब्दों का प्रयोग किया जाता है, सम्बोधन में उन शब्दों की ध्वनि मात्रा में वृद्धि हो जाती है। जैसे-

नम्बि- नम्बीइइ!
नङ्गै - नङ्गाअअय्!
चात्तन् - चात्ताअ!

सूत्र (633) के अनुसार "अम्म" (आश्चर्य को व्यक्त करने वाला निपात) निपात सम्बोधन को स्वीकार करता है, अर्थात् अम्म का अन्तिम स्वर दीर्घ हो जाता है- जैसे

अम्म पेरिदु- अम्मा पेरिदु

ध्यान रहे "अम्म" शब्द यहाँ माँ का बोधक शब्द नहीं है अपितु आश्चर्य को व्यक्त करने वाला निपात मात्र है।

विरवुप्पेयर् विळियेर्कुमारु/उभयवाची शब्दों में सम्बोधन

उभयवाची शब्द सूत्र (630) के अनुसार सम्बोधन में महद्वाची (स्वरान्त तथा व्यञ्जनान्त) की तरह ही परिवर्तित होते हैं। इनके लिए पृथक् से कोई व्यवस्था नहीं की गई हैं। जैसे-

चात्ति - चात्ती! (सूत्र (601) प्रवृत्त होता है)
पुण्डु - पूण्डे! (सूत्र (602) सूत्र प्रवृत्त होता है)
तन्दै - तन्दाय्! (सूत्र (601) प्रवृत्त होता है)
चात्तन् - चात्ता! (सूत्र (610) प्रवृत्त होता है)
कुन्दल् - कून्दाल्! (सूत्र (624) प्रवृत्त होता है)
मगळ - मगळे! (सूत्र (624) प्रवृत्त होता है)

महद्वाची, अमहद्वाची तथा उभयवाची शब्दों के सम्बोधन का अध्ययन करने से पता चलता है कि इ उ ऐ ओ स्वरान्तों से भिन्न स्वरान्त वाले महद्वाची शब्द, न् र् ल् ळ् व्यञ्जनान्तों से भिन्न व्यञ्जनान्त वाले महद्वाची शब्द सम्बोधन को स्वीकार नहीं करते हैं। यह विवरण सूत्र क्रमशः सूत्र 604 व सूत्र 609 में किया है।

सन्दर्भ-

1. शब्दकल्पद्रुम (सम्बोधन शब्द के प्रसङ्ग में)
2. शब्दकल्पद्रुम (सम्बोधन शब्द के प्रसङ्ग में)
3. हैमव्याकरण (हेमचन्द्रः)
4. काशिका (सम्बोधने च 02/03/47)
5. पदमञ्जरी (सम्बोधने च (02/03/47))
6. बालमनोरमा (सम्बोधने च (02/03/47)
7. अष्टाध्यायी (02/03/47)
8. तोल्काप्पियम्, शब्दखण्ड, सूत्र संख्या - 598
9. अष्टाध्यायी. (02/03/49)